मवेशियों के प्रमुख रोगों के लिए परंपरागत उपचार विधियाँ

□□□□□□□□ □□□□□□ □□□□□□ □□□□□ □□ □□□□

थनैला

सामग्री

(क) घृतकुमारी- 250 ग्राम, (ख) हल्दी- 50 ग्राम (गाँठ या पिसी हुई), (ग) चूना-15 ग्राम, (घ) नींबू-2 नग

तैयार करने की विधि

(i) सामग्री (क) से (ग) तक को पीसकर लाल रंग का पेस्ट बना लें। (ii) दोनों नींबुओं को दो हिस्सों में काट लें।

उपयोग करने की विधि

(i) मुट्ठी भर मिश्रण में 150-200 मिली पानी मिलाकर इसे पतला कर लें। (ii) थन को धोकर अच्छे से साफ करें और यह मिश्रण सम्पूर्ण थन पर अच्छे से लगाएँ। (iii) इस विधि को दिन में 10 बार, 5 दिन तक दोहराएँ। (iv) पशु को 3 दिन तक प्रतिदिन 2 नींबू खिलाएँ।

नोट: दूध में खून आने पर उपरोक्त विधि के अतिरिक्त, 2 मुट्ठी करी पत्ता और गुड़ का पीसकर बनाया गया मिश्रण दिन में दो बार पशु की स्थिति में सुधार आने तक खिलाएँ।

स्तनाग्र अवरुद्ध होने की स्थिति में

सामग्री

ताजा तोड़ा गया साफ नीम पर्णवृंत, हल्दी पाउडर, मक्खन अथवा घी

तैयार करने की विधि

(i) नीम के पर्णवृंत को स्तनाग्र की लंबाई जितना या आवश्यकता अनुसार काट लें। (ii) नीम पर्णवृंत पर हल्दी पाउडर एवं मक्खन/घी के मिश्रण को अच्छी तरह लगा लें।

प्रयोग की विधि

(i) मिश्रण लगाए हुए नीम पर्णवृंत को रोग ग्रसित स्तनाग्र में घड़ी की सुई की दिशा के विपरीत घुमाते हुए अंदर घुसाएँ। (ii) दूध निकालने के बाद प्रत्येक बार नए नीम पर्णवृंत का प्रयोग करें।

थन में शोफ (इडिमा)

खाने का तेल

हल्दी

लहसुन

सामग्री

तिल अथवा सरसों का तेल - 200 मिलि, हल्दी पाऊडर - 1 मुट्ठी, लहसुन-2 कलियाँ

तैयार करने की विधि

(i) तेल को गरम करके उसमें हल्दी पाउडर एवं बारीक काटा हुआ लहसुन डालें। (ii) मिश्रण को अच्छे से मिलाएँ एवं सुगंध आने पर आंच से उतार लें (उबालने की आवश्यकता नहीं है) (iii) मिश्रण को ठंडा होने दें।

उपयोग करने की विधि

(i) इस मिश्रण को सूजन वाले हिस्से या पूरे थन पर दबाव के साथ गोल घुमाते हुए लगाएँ। (ii) इसे 3 दिन तक प्रतिदिन 4 बार प्रयोग करें।

नोट: इस विधि को प्रयोग में लेने से पूर्व सुनिश्चित कर लें कि पशु को थनैला रोग नहीं है।

जेर नहीं गिरना

मूली

भिंडी

गुड़

नमक

सामग्री:

मूली - 1 नग, भिंडी - 1.5 किलो, गुड़ - आवश्यकतानुसार, नमक - आवश्यकतानुसार

तैयार करने की विधि:

भिंडी को दो हिस्से में काट लें।

प्रयोग की विधि:

(i) ब्याने के 2 घंटे के अंदर पशु को एक पूरी मूली खिला दें (ii) अगर पशु ब्याने के 8 घंटे बाद तक भी जेर नहीं गिराता है तो 1.5 किलो ताजी भिंडी को नमक एवं गुड़ के साथ पशु को खिला दें। (iii) अगर पशु ब्याने के 12 घंटे बाद भी जेर नहीं गिराता है तो, पशु के शरीर के एकदम पास में जेर में गाँठ बांध दें और गाँठ के 2 इंच नीचे से इसे काटकर छोड़ दें। गाँठ पशु के शरीर के अंदर चली जाएगी। (iv) हाथों से जेर निकालने का प्रयास कभी नहीं करें।(v) 4 सप्ताह तक, सप्ताह में एक बार पशु को एक मूली खिलाएँ।

बांझपन की समस्या

मूली

घृतकुमारी/ग्वारपाठा

हडजोड

सहजन

गुड़

करी पता

नमक

हल्दी

प्रयोग की विधि

(i) मद चक्र के पहले या दूसरे दिन उपचार शुरू करें (ii) दिन में एक बार नीचे दिये गए क्रमानुसार गुड़ या नमक के साथ ताजा अवस्था में खिलाएँ: (a) 1 मूली रोजाना 5 दिन तक (b) ग्वारपाठा/घृतकुमारी की 1 पत्ती रोजाना, 4 दिन तक। (c) सहजन की 4 मुट्ठी पत्तियाँ रोजाना, 4 दिन तक। (d) 4 मुट्ठी हडजोड़ के तने रोजाना, 4 दिन तक। (e) रोजाना 4 मुट्ठी करी पत्तियाँ, हल्दी के साथ मिलाकर 4 दिन तक। (f) अगर पशु गाभिन नहीं होता है, तो यह उपचार एक बार फिर दोहराए।

शरीर/अंग बाहर

ग्वारपाठा/घृतकुमारी जेल

हल्दी

छुईमुई की पत्तियाँ

सामग्री:

ग्वारपाठा जेल- (1 पूरी पत्ती से निकला), हल्दी- 1 चुटकी, छुईमुई की पत्तियाँ- 2 मुट्ठी

तैयार करने की विधि

(i) 1 पूरी ग्वारपाठा पत्ती से जेल निकाल लीजिये (ii) इसे चिपचिपापन हटने तक बार बार धोयें। (iii) अब इसमें एक चुटकी हल्दी मिलाकर आधा रहने तक उबालें और फिर ठंडा कर लें। (iv) छुईमुई की पत्तियों को पीसकर पेस्ट बना लें।

प्रयोग की विधि

(i) बाहर निकले हुए अंग/हिस्से को ठीक से साफ कर लें। (ii) बाहर निकले हिस्से पर इस जेल को छिड़कें (iii) जेल के सूख जाने पर बाहर निकले हिस्से पर छुईमुई की पत्तियों का पेस्ट लगाएँ। (iv) जब तक अंग अंदर नहीं चला जाये, यह प्रयोग दोहराते रहें।

खुरपका-मुंहपका रोग में मुँह के छाले

सामग्री

जीरा-10 ग्राम, मेथीदाना-10 ग्राम, काली मिर्च-10 ग्राम, हल्दी पाउडर-10 ग्राम, लहसुन-4 कलियाँ, नारियल- 1 नग, गुड़- 120 ग्राम

तैयार करने की विधि

(i) जीरा, मेथी एवं काली मिर्च को 20-30 मिनिट के लिए पानी में भिगो दें (ii) सभी सामग्रियों को बारीक पीसकर पेस्ट बना लें (iii) एक सम्पूर्ण नारियल के बुरादे को इस मिश्रण में हाथ से मिलाएँ। (iv) प्रत्येक बार प्रयोग के लिए इस मिश्रण को ताजा बनाएँ।

प्रयोग करने की विधि

(i) इस मिश्रण को मुँह के अंदर, जीभ एवं तालु पर (ii) इस विधि को दिन में तीन बार 3-5 दिनों तक प्रयोग करें। लगाएँ।

खुरपका मुंहपका रोग में पैरों के घाव

सामग्री

कुप्पी के पत्ते- 1 मुट्ठी, लहसुन-10 कलियाँ, नीम के पत्ते- 1 मुट्ठी, नारियल तेल- 250 मिली, हल्दी -20 ग्राम, मेहँदी पत्ते- 1 मुट्ठी, तुलसी पत्ते- 1 मुट्ठी

तैयार करने की विधि

(i) सभी सामग्रियों को पीसकर पेस्ट बना लें (ii) इसमें 250 मिली नारियल/तिल का तेल मिलाकर उबालें और ठंडा कर लें।

प्रयोग की विधि

(i) घाव को साफ करें और इस मिश्रण को घाव पर सीधे ही या पट्टी में बांधकर लगाएँ। (ii) अगर घाव में कीड़े पड़े हो तो पहले दिन, नारियल तेल में कपूर मिलाकर अथवा सीताफल कि पत्तियों का पेस्ट बनाकर लगाएँ।

बुखार

सामग्री

लहसुन- 2 कलियाँ, धनिया- 10 ग्राम, जीरा- 10 ग्राम, तुलसी पत्ता- 1 मुट्ठी, दालचीनी कि सूखी पत्तियाँ - 10 ग्राम, काली मिर्च- 10 ग्राम, पान के पत्ते- 5 नग, छोटे प्याज़- 2 नग, हल्दी- 10 ग्राम, चिरायता के पत्ते का पाऊडर - 20 ग्राम, बेसिल के पत्ते- 1 मुट्ठी, नीम के पत्ते- 1 मुट्ठी, गुड़- 100 ग्राम

तैयार करने की विधि

(i) जीरा, काली मिर्च एवं धनिये को 15 मिनट के लिए पानी में भिगो दें। (ii) सभी सामग्रियों को पीसकर पेस्ट बना लें।

प्रयोग करने कि विधि

(i) थोड़ी थोड़ी मात्र में इस मिश्रण को सुबह शाम पशु को खिलाएँ।

दस्त/अतिसार

सामग्री

मेथीदाने- 10 ग्राम, प्याज़- 1 नग, लहसुन- 1 कली, जीरा- 10 ग्राम, हल्दी- 10 ग्राम, करी पत्ता- 1 मुट्ठी, खसखस- 5 ग्राम, काली मिर्च - 10 ग्राम, गुड़ - 100 ग्राम, हींग- 5 ग्राम

तैयार करने की विधि

(i) जीरा, हींग, खसखस एवं मेथी दानों को सूखा भून लें। (ii) भुने हुए बीजों को ठंडा कर पीस लें। (iii) अब इसमें अन्य सामग्रियाँ मिलाकर पीस लें एवं पेस्ट बना लें।

प्रयोग की विधि

(i) मिश्रण के छोटे छोटे लड्डू बना लें
(ii) तैयार लड्डू पशु को दिन में एक बार, 1-3 दिनों तक खिलाएँ जब तक कि स्थिति सुधर न जाए।

आफरा एवं अपच

सामग्री

प्याज़ - 100 ग्राम, लहसुन - 10 कलियाँ, लाल मिर्ची - 2 नग, जीरा - 10 ग्राम, हल्दी- 10 ग्राम, गुड़- 100 ग्राम, काली मिर्च- 10 ग्राम, पानके पत्ते- 10 नग, अदरक - 100 ग्राम

तैयार करने की विधि

(i) काली मिर्च एवं जीरे को 30 मिनट के लिए पानी में भिगो दें। (ii) सभी सामग्रियों को पीसकर पेस्ट बना लें।

प्रयोग की विधि

(i) तैयार पेस्ट के छोटे छोटे लड्डू बना लें (ii) तैयार लड्डू को दिन में 3-4 बार, तीन दिनों तक पशु को खिलाएँ।

कृमि

सामग्री

प्याज़-1 नग, लहसुन-5 कलियाँ, सरसों- 10 ग्राम, नीम के पत्ते- 1 मुट्ठी, जीरा- 10 ग्राम, करेला- 50 ग्राम, हल्दी- 5 ग्राम, काली मिर्च- 5 ग्राम, केले का तना- 100 ग्राम द्रोणपुष्पी- 1 मुट्ठी, गुड़- 100 ग्राम

तैयार करने कि विधि

(i) जीरा, काली मिर्च एवं सरसों को 30 मिनट के लिए पानी में भिगो दें। (ii) सभी सामग्रियों को मिलाकर पीस लें और एक पेस्ट बनालें।

प्रयोग कि विधि

(i) मिश्रण के छोटे छोटे लड्डू बना लें। (ii) तैयार लड्डू को थोड़े नमक के साथ दिन में एक बार पशु को खिलाएँ। यह प्रयोग 3 दिन तक करें।

चिंचड़ी/बाह्य परजीवी

सामग्री

लहसुन- 10 कलियाँ, नीम के पत्ते- 1 मुट्ठी, निमोली- 1 मुट्ठी, वच के कंद- 10 ग्राम, हल्दी- 20 ग्राम, चतुरंगी/लैंटाना के पत्ते- 1 मुट्ठी, तुलसी के पत्ते- 1 मुट्ठी

तैयार करने की विधि

(i) सभी सामग्रियों को पीस लें (ii) इस मिश्रण में 1 लिटर साफ पानी मिलाएँ (iii) बारीक छलनी अथवा मलमल के कपड़े से छान लें। (iv) इस द्रव को स्प्रे बोतल में भर लें।

प्रयोग की विधि

(i) पशु के सम्पूर्ण शरीर पर स्प्रे करें। (ii) पशु गृह में मौजूद किसी दरार या सुराख में भी स्प्रे करें। (iii) इस द्रव में कपड़े को डुबोकर भी पशु के शरीर पर लगाया जा सकता है। (iv) जब तक चिचड़ी खत्म न हो, इस उपचार को सप्ताह में एक बार दोहराते रहें। (v) इस उपचार को दिन के गर्म समय में ही करें।

चेचक/मस्सा/त्वचा का फटना

सामग्री

लहसुन-5 कलियाँ, हल्दी-10 ग्राम, जीरा-15 ग्राम, तुलसी पत्ता-1 मुट्ठी, नीम पत्ता-1 मुट्ठी, मक्खन/घी-50 ग्राम

तैयार करने कि विधि

(i) जीरे को 15 मिनट के लिए पानी में भिगो दें।
(ii) सभी सामग्रियों को पीसकर पेस्ट बना लें।
(iii) मक्खन डालकर अच्छे से मिलाएँ।

प्रयोग करने की विधि

(i) चेचक/मस्से/फटी हुई त्वचा पर, ठीक होने तक यह मिश्रण बार-बार लगायें (ii) मिश्रण लगाने से पहले त्वचा को अच्छे से साफ करके सुखा लें।

Source:https://www.dairyknowledge.in/sites/default/files/pdfs/EVM_Brochure_Hindi.pdf